दुनियां इस्क न ईमान, क्यों उड़या जाए बिना पर।
तो दुनी कही जिमी नासूती, रूहें आसमानी जानवर।। ९६ ।।

दुनियां वालों के पास न इश्क है न ईमान, तो वह बिना पर के कैसे उड़ सकते हैं? इसलिए दुनियां वालों को मृत्युलोक का कहा है और रूहों को आसमान में उड़ने वाला कहा है।

ए दुनियां जो खेल की, छोड़ सुरिया आगे ना चलत।
सो कायम फना क्या जानहीं, जाकी पैदास कही जुलमत।। ९७ ।।

यह झूठे खेल की दुनियां सुरिया सितारा (ज्योति स्वरूप) को छोड़कर आगे नहीं चलती। यह अखण्ड और नाशवान के भेद को कैसे समझे, जो निराकार से पैदा है।

महामत कहे ए मोमिनों, बका हासिल अर्स रूहन।
कह्या दिल जिनों का अर्स बका, ए मोमिन असल अर्स में तन।। ९८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! परमधाम की रूहों को अपना अखण्ड घर प्राप्त है। जिनके दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है, उन मोमिनों के असल तन परमधाम में हैं।

॥ प्रकरण ॥ २४ ॥ चौपाई ॥ १८५० ॥

मोमिनों की सरियत, हकीकत, मारफत इस्क रब्द का प्रकरण

इस्क रब्द खिलवत में, हुआ हक हादी रूहों सों।
सबों ज्यादा इस्क कह्या अपना, तो तिलसम देखाया रूहों कों।। १ ।।

मूल-मिलावा (परमधाम) में श्री राजश्यामाजी और सखियों के बीच इश्क का वार्तालाप हुआ। सभी ने अपने इश्क को ज्यादा कहा, इसलिए इश्क के विवरण के लिए रूहों को यह तिलसम का खेल दिखाया।

तिन फरेब में रल गैयां, जित पाइए ना इस्क हक।
कहें हक मोहे तब पाओगे, जब ल्योगे मेरा इस्क।। २ ।।

ऐसे माया के झूठे संसार में आकर रूहें भी हिल-मिल गईं, जहां श्री राजजी महाराज का इश्क नहीं है। श्री राजजी महाराज ने कहा कि अब तुम मुझे तब पाओगे, जब मेरे इश्क को लोगे।

यों हकें छिपाइयां खेल में, दे इलम करी खबरदार।
रब्द किया याही वास्ते, ल्याओ प्यार करो दीदार।। ३ ।।

इस तरह से रूहों को श्री राजजी ने खेल में छिपा दिया (भुला दिया) और अब जागृत बुद्धि की तारतम वाणी देकर जगा दिया। इश्क के वास्ते ही वार्तालाप किया था। अब श्री राजजी कहते हैं कि अपने इश्क को लो और मेरे पास आ जाओ।

मोमिन हक को जानत, नजीक बैठे हैं इत।
हक कदम हमारे हाथ में, पर हम नजरों ना देखत।। ४ ।।

मोमिन जानते हैं कि श्री राजजी महाराज हमारे पास बैठे हैं। उनके चरण हमारे हाथ में हैं, पर हम अपनी नजर से उन्हें देख नहीं सकते।

Nijanand App

ए तेहेकीक किया हक इलमें, इनमें जरा न सक।
यों नजीक जान पेहेचान के, हम बोलत ना साथ हक।।५।।

श्री राजजी महाराज के इलम ने यह निश्चित कर दिया है। कोई संशय भी नहीं है कि हम सावधान होकर श्री राजजी के चरणों में बैठे हैं, पर हमारे तन बोल नहीं सकते।

ए फरामोसी फरेबी, हम जान के भूलत।
हक छिपे हमसों हांसीय को, हाए हाए ए भूल दिल में भी न आवत।।६।।

इस फरामोशी और इस झूठे संसार की जानकारी श्री राजजी महाराज ने हमें दे दी थी। फिर भी हम जानकर भूल रहे हैं। श्री राजजी महाराज हम पर हंसी करने के वास्ते ही छिप गए हैं। हाय! हाय! यही भूल हमारे दिल में अब क्यों नहीं आती?

बैठे मासूक जाहेर, पर दिल ना लगे इत।
मासूक मुख देखन को, हाए हाए नैना भी ना तरसत।।७।।

प्यारे माशूक श्री राजजी महाराज मूल-मिलावा में जाहिर बैठे हैं, परन्तु अब हमारा दिल वहां लगता ही नहीं। श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के दर्शन करने की याद भी हमारे दिल में नहीं रही। जो हमारे नैन एक पल भी धनी से ओझल नहीं होते थे, अब इन नैनों को भी दर्शनों की चाह नहीं रही।

सुनने कान ना दौड़त, मासूक मुख की बात।
इस्क न जानों कहां गया, जो था मासूक सों दिन रात।।८।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की बातें यहां के कान भी सुनना नहीं चाहते। श्री राजजी महाराज के इश्क में दिन-रात गर्क रहते थे, वह भी पता नहीं अब कहां चला गया?

रूह अंग ना दौड़े मिलन को, ऐसा अर्स खावंद मासूक।
मेहेबूब जुदागी जान के, अंग होत नहीं टूक टूक।।९।।

माशूक श्री राजजी महाराज से मिलने के लिए अब रूह का तन परआतम भी दौड़ती नहीं है। श्री राजजी महाराज की ऐसी जुदाई जानकर भी हमारे इस संसार के तन के टुकड़े-टुकड़े नहीं होते।

जो याद आवे ए कदम की, तो तबहीं जावे उड़ देह।
कोई बन्ध पड़्या फरेब का, आवे जरा न याद सनेह।।१०।।

यदि श्री राजजी महाराज के चरण कमलों की याद आए, तो संसार का यह तन तुरन्त समाप्त हो जाए, परन्तु इस संसार के ऐसे बन्धन पड़े हैं कि अपने इश्क की जरा भी याद नहीं आती।

इस्क हमारा कहां गया, जो दिल बीच था असल।
तिन दिलें सहूर क्यों छोड़िया, जो विरहा न सेहेता एक पल।।११।।

परमधाम में जो हमारा सच्चा इश्क था। वह अब चला गया। जो हमारे तन एक पल का भी वियोग सहन नहीं करते थे, वह विचार हमने क्यों छोड़ दिया?

जो दिल से ए सहूर करें, तो क्यों रहें मिले बिगर।
अर्स बेसकी सुन के, अजूं क्यों रहें नींद पकर।।१२।।

अब दिल से विचार करें तो श्री राजजी से मिले बिना कैसे रह सकते हैं? परमधाम की ऐसी निस्संदेह बातें सुनकर भी हम नींद क्यों पकड़े बैठे हैं?

Nijanand App

बातें सबे सुपन की, करें जागे पीछे सब कोए।
पर जागे की बातें सबे, सुपने में कबूं न होए।। १३ ।।

सपने की बातें जागने के बाद घर में सभी करते हैं, परन्तु जागृत अवस्था की बातें तो सपने में कभी नहीं होतीं।

सो जरे जरे जाग्रत की, सब बातें होत बेसक।
नींद रेहेत अचरज सों, आए दिल में अर्स मुतलक।। १४ ।।

अब जागृत अवस्था की जरा-जरा बातें भी यहां सपने में हो रही हैं। श्री राजजी महाराज दिल में आकर बैठ गए हैं और फिर भी यह सपने का तन खड़ा है, यह बड़ी हैरानी है।

सो कराई मासूकें हमपे, सब अर्स बातें सुपने।
सब गुजरी जो हक हादी रूहों, सो सब करत हम आप में।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने परमधाम की सभी बातें मुझसे सपने के संसार में जाहिर करवाईं। जो श्री राजश्यामाजी और रूहों के बीच इश्क का वार्तालाप हुआ था, वह अब हम सब बैठकर बातें करते हैं।

हुआ जाती सुमरन जिनको, अर्स अजीम जैसा सुख।
निसबत बका नूरजमाल, अजूं क्यों पकड़ रहें देह दुख।। १६ ।।

जिनको अपने आप को परमधाम में श्री राजजी की अंगना होने की याद आ गई है और परमधाम के सुखों की याद आ गई है, वह भी क्यों दुःख के संसार को पकड़कर बैठी हैं?

ज्यों जाहेर खड़े देखिए, त्यों देखिए इन इलम।
यों लाड़ लज्जत सुख देवहीं, बैठाए अपने तले कदम।। १७ ।।

जैसा जाहिर में परमधाम को खड़े होकर देखा करते थे, वैसे अब यहां इलम से देख रहे हैं। इस तरह से श्री राजजी महाराज परमधाम के लाड़-लज्जत के सुख अपने चरणों तले बिठाकर दे रहे हैं।

सुपन त्यों का त्यों खड़ा, लिए नींद वजूद।
अर्स मता सब देख्या बका, देह झूठी इन नाबूद।। १८ ।।

फिर भी यह सपने के संसार का तन जैसे का तैसा खड़ा है, जबकि अखण्ड परमधाम की सब न्यामतें इस झूठे तन में देख ली हैं।

जब सुपन से जागिए, तब नींद सबे उड़ जात।
सो जागे में सक ना रही, करें माहों–माहें सुपन बात।। १९ ।।

सपने से जाग जाते हैं, तो सब नींद समाप्त हो जाती है। तो अब जागने में भी शक नहीं रह गई, क्योंकि हम सब आपस में बैठकर सपने की बातें करते हैं।

ऐसा किया हकें सुपन में, जानों जागे में सक नाहें।
ऐसी हुई दिल रोसनी, फेर बोलत सुपनें माहें।। २० ।।

श्री राजजी महाराज ने सपने के संसार में ही ऐसा कर दिया कि लगता है कि हम निश्चित रूप से जागे हैं। हमारे दिल में ऐसा ज्ञान आ गया है, फिर भी सपने के तन से बोल रहे हैं।

Nijanand App

जानों सुपने नींद उड़ गई, मुरदे हुए वजूद।
हकें हक अर्स देखाइया, सुपन हुआ नाबूद।। २१ ।।

लगता है, सपने में हमारी नींद समाप्त हो गई और हमारे तन मर चुके। श्री राजजी महाराज ने अपने सच्चे परमधाम को दिखा दिया है और सपना समाप्त हो गया है।

फेर सुपन तरफ जो देखिए, तो मुरदे खड़े बोलत।
बातें करें अकल में, ऐसा हुकमें देख्या खेल इत।। २२ ।।

फिर सपने की तरफ देखते हैं तो यह मुर्दे तन खड़े होकर बोल रहे हैं और बातें भी बुद्धिमानी की कर रहे हैं। ऐसा विचित्र यह खेल श्री राजजी के हुकम ने दिखाया।

कबूं कोई न बोलिया, बका बातें हक मारफत।
दे मुरदों को इलम अपना, सो बातें हुकम बोलावत।। २३ ।।

अखण्ड परमधाम के ज्ञान की बातें यहां आज तक किसी ने नहीं बताईं। हमारे इन झूठे तनों को अपना इलम देकर अखण्ड परमधाम की सभी बातें हुकम बुलवा रहा है।

हुए वजूद नींद के अर्स में, सो नींद दई उड़ाए।
दे जाग्रत बातें दिल में, दिल अरसै किया बनाए।। २४ ।।

परमधाम में हमारे तन फरामोशी में हो गए थे। वह फरामोशी अब समाप्त हो गई। अब जागृत अवस्था की बातें दिल में लेकर हम मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बना लिया है।

असल मुरदा वजूद, भी हक इलमें दिया मार।
जगाए दिए बीच अर्स के, बातें मुरदा करे समार।। २५ ।।

हमारे मूल तनों पर परमधाम में फरामोशी का परदा डालकर मुर्दे के समान कर दिया है। इस बात की पहचान श्री राजजी के जागृत बुद्धि के ज्ञान ने हमें दी है। अब इस संसार के मुर्दे तन को अपना अर्श बनाकर परमधाम जैसा तन बना दिया है, जिससे ऐसा लगता है, कि हम परमधाम में जाग गए हैं।

यों कई बातें हांसीय को, मासूक करत हम पर।
वास्ते रब्द इस्क के, ए हकें बनाई यों कर।। २६ ।।

इस तरह से श्री राजजी महाराज हमारे ऊपर कई तरह की हंसी की बातें करते हैं। इश्क रब्द के फलस्वरूप ही श्री राजजी महाराज ने ऐसी हालत बना रखी है।

अब जो हिंमत हक देवहीं, तो उठ मिलिए हक सों धाए।
सब रूहें हक सहूर करें, तो जामें तबहीं देवें उड़ाए।। २७ ।।

अब श्री राजजी महाराज ही अपनी हिम्मत दें, तो उठें और दौड़कर उनसे मिलें। ऐसा जब सब रूहें विचारें तो यह संसार के तन उसी समय समाप्त हो जाएं।

सहूर बिना ए रेहेत है, तेहेकीक जानियो एह।
ए भी हुकम हक बोलावत, हक सहूरें आवत सनेह।। २८ ।।

जब तक ऐसा विचार नहीं आता, तब तक निश्चित यह संसार खड़ा है। यह भी श्री राजजी महाराज का हुकम बुलवाता है और ऐसा विचार भी श्री राजजी महाराज की मेहर से आता है।

Nijanand App

सनेह आए झूठ ना रहे, जो पकड़ बैठे हैं हम।
ए झूठ नजरों तब क्यों रहे, जब याद आवें सनेह खसम।। २९ ।।

जिस तन को हम पकड़े बैठे हैं, इश्क आने पर यह नहीं रहेगा। यह झूठा संसार तब कैसे रह सकता है, जब श्री राजजी महाराज के इश्क की याद आ जाएगी।

हकें इलम भेज्या याही वास्ते, देने हक अर्स लज्जत।
सो मांगी लज्जत सब देय के, आखिर उठावसी दे हिंमत।। ३० ।।

अर्श की लज्जत देने के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने यह जागृत बुद्धि की तारतम वाणी भेजी। इस मांगे हुए खेल की सब चाहना पूरी कर अन्त समय में अपनी हिम्मत देकर हमें उठाएंगे।

जो हक न देवे हिंमत, तो पूरा होए न हांसी सुख।
जो रूह भाग जाए आखिर लग, हांसी होए न बिना सनमुख।। ३१ ।।

यदि श्री राजजी महाराज हौसला न बढ़ाएं, हिम्मत न दें, तो हंसी का सुख पूरा नहीं हो सकता। जो रूहें आखिर तक जागी ही नहीं, तो श्री राजजी के सामने जाए बिना उन पर हंसी नहीं होगी।

हक हिंमत देसी तेहेकीक, हांसी होए ना हिंमत बिन।
ए गुझ बातें तब जानिए, हक सहूर आवे हादी रूहन।। ३२ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज निश्चित रूप से हिम्मत देंगे। बिना हिम्मत दिए हंसी हो नहीं सकती। यह रहस्य की बातें हम तब समझें, जब हमें, श्री श्यामाजी और रूहों को, श्री राजजी की पहचान हो और याद आए।

ए बारीक बातें मारफत की, तिन बारीक का बातन।
ए बातें होंए हक हिंमतें, हक सहूर करें मोमिन।। ३३ ।।

यह परमधाम की बारीक (खास) बातें और बारीक की भी यह बातून बारीक बाते हैं। यह सब श्री राजजी महाराज की हिम्मत से होती हैं। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि का मोमिन विचार कर सकते हैं।

हिंमत तो भी हुकम, रूह हुज्जत सो भी हुकम।
तन हुकम सो भी हुकम, सब हुकम तले कदम।। ३४ ।।

हिम्मत भी हुकम दे रहा है। रूहें जो दावा लेती हैं वह भी हुकम देता है। मोमिनों का तन भी हुकम से है। श्री राजजी महाराज के चरणों तले भी हुकम से ही हम बैठे हैं।

इलम इस्क तो भी हुकम, सहूर समझ सो हुकम।
जोस होस सो भी हुकम, आद अंत हुकम तले हम।। ३५ ।।

इलम, इश्क और समझ सब हुकम से ही आते हैं। जोश और होश भी सब हुकम से आता है। इस तरह से आदि से अन्त तक हम सब हुकम के अधीन हैं।

बातें हकसों अर्स में, जो करते थे प्यार।
सो निसबत कछूए ना रही, ना दिल चाहे दीदार।। ३६ ।।

परमधाम में श्री राजजी हमसे बड़े प्यार से जो बातें करते थे, अब वह अंगना होने का कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहा और न दर्शन करने की दिल में चाहना ही रही।

Nijanand App

ना तो बैठे हैं ठौर इतहीं, इतहीं किया रब्द।
पर ऐसा फरेब देखाइया, जो पोहोंचे ना हमारा सब्द।। ३७ ।।

नहीं तो हम मूल-मिलावा में बैठे हैं और यहीं पर इश्क का वार्तालाप हुआ, परन्तु यह ऐसा झूठा खेल दिखाया है कि अब हमारी आवाज परमधाम तक नहीं जाती।

इतथें कोई उठी नहीं, बैठा मिलावा मिल।
बेर साइत एक ना हुई, यों इलमें बेसक किए दिल।। ३८ ।।

मूल-मिलावा से कोई रूह उठी नहीं है। सब मिलकर मूल-मिलावा में बैठी हैं। वहां एक पल की भी देरी नहीं हुई है। इस तरह से जागृत बुद्धि की वाणी से निस्संदेह हो गए हैं।

इस्क मिलावा और है, और मिलावा मारफत।
इलमें लई कई लज्जतें, इस्क गरक वाहेदत।। ३९ ।।

इश्क से मिलना और है। मारफत ज्ञान से मिलने की हकीकत अलग है। इलम से कई तरह की लज्जत मिलती है। इश्क एकाकार करके गर्क कर देता है।

ताथें बड़ी हकीकत मोमिनों, बड़ी मारफत लज्जत।
मोमिन लीजो अर्स दिल में, ए नेक हुकम कहावत।। ४० ।।

इसलिए हे मोमिनो! मारफत के ज्ञान की लज्जत बहुत बड़ी है, जिसे तुम अपने अर्श दिल में लेना। यह थोड़ा सा भी श्री राजजी का हुकम ही कहलवा रहा है।

जो कदी इस्क आवे नहीं, तो मोमिन बैठ रहें क्यों कर।
अर्स हकसों बेसक होए के, क्यों रहें अर्स बिगर।। ४१ ।।

यदि इश्क आता नहीं है तो मोमिन शान्ति से क्यों बैठे हैं? श्री राजजी महाराज और परमधाम की निश्चित पहचान हो जाने के बाद यह परमधाम के बिना कैसे रह रहे हैं?

इस्क क्यों ना उपजे, पर रूहों करना सोई उद्दम।
राह सोई लीजिए, जो आगूं हादिएं भरे कदम।। ४२ ।।

इश्क आता क्यों नहीं है? इसके लिए रूहों को उपाय करना है। हमें भी उसी रास्ते पर चलना पड़ेगा, जिस रास्ते पर श्री प्राणनाथजी ने चलकर बताया है।

ए तिलसम क्योंए न छूटहीं, जहां साफ न होवे दिल।
अर्स दिल अपना करके, चलिए रसूल सामिल।। ४३ ।।

जब तक दिल साफ न हो जाए, यह झूठा संसार नहीं छूटता, इसलिए अपने दिल में श्री राजजी महाराज को बैठाकर और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी को साथ लेकर चलें।

पाक न होइए इन पानिएं, चाहिए अर्स का जल।
न्हाइए हक के जमाल में, तब होइए निरमल।। ४४ ।।

संसार के इस पानी से दिल साफ नहीं होता। दिल को साफ करने के लिए परमधाम की वाणी चाहिए। फिर दिल साफ हो जाने पर श्री राजजी महाराज के साक्षात् दर्शन होंगे।

Nijanand App

पाक होना इन जिमिएं, और न कोई उपाए।
लीजे राह रसूल इस्कें, तब देवें रसूल पोहोंचाए।। ४५ ।।

इस संसार में पाक होने का और कोई रास्ता नहीं है। हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने इश्क का जो रास्ता बताया है, यदि उस पर चलें तो वह स्वयं परमधाम पहुंचा देंगे।

अब कहूं सरीयत मोमिनों, जिन लई हकीकत हक।
हक के दिल की मारफत, ए तिन में हुए बेसक।। ४६ ।।

अब जिन मोमिनों को श्री राजजी महाराज की पहचान हो गई है, उन्हें संसार में कैसे रहना है, वह तरीका बताती हूं, क्योंकि श्री राजजी महाराज के दिल की बातें (मारफत ज्ञान) जान लेने से ही संसार में उनके कोई संशय नहीं रहते।

मोमिन उजू जब करें, पीठ देवें दोऊ जहान को।
हौज जोए जो अर्स में, रूहें गुसल करे इनमों।। ४७ ।।

मुसलमान लोग नमाज के समय अपने इस शरीर के चौदह अंग इस पानी से धोते हैं, लेकिन मोमिन हकीकत की नमाज के लिए कालमाया के ब्रह्माण्ड और योगमाया के ब्रह्माण्ड को पीठ देकर हौजकौसर और जमुनाजी के चितवन से नहाते हैं। यह मोमिनों का उजू है।

दम दिल पाक तब होवहीं, जब हक की आवे फिराक।
अर्स रूहें दिल जुदा करें, और सबसे होए बेबाक।। ४८ ।।

इस तरह से नहाने के बाद मोमिनों के शरीर और दिल तभी पाक होते हैं, जब उन्हें अपने धनी का वियोग तड़पाता है। तब अर्श की रूहें संसार के सब सम्बन्धों को तोड़ें, तो वही दुनियां से बेबाक होना है और अपने दिल से सब दुनियां वालों को निकाल देना है।

चौदे तबक को पीठ देवहीं, ए कलमा कह्या तिन।
कलाम अल्ला यों केहेवहीं, ए केहेनी है मोमिन।। ४९ ।।

यह जागृत बुद्धि का ज्ञान मोमिनों के वास्ते आया है। मोमिन इसे समझकर चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को छोड़ देंगे। कुरान में इसको मोमिनों की कहनी बतलाई है।

ला फना सब ला करें, और इला बका ग्रहें हक।
ए कलमा हकीकत मोमिनों, और हक मारफत बेसक।। ५० ।।

मोमिन इस नाश होने वाले संसार को बिलकुल समझकर छोड़ देते हैं। अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज को दिल में बसाना मोमिनों की हकीकत है। श्री राजजी के साथ पल-पल परमधाम के सुख लेना मोमिनों की मारफत है।

नूर के पार नूर तजल्ला, रसूल अल्ला पोहोंचे इत।
मोमिन उतरे नूर बिलंद से, सो याही कलमें पोहोंचें वाहेदत।। ५१ ।।

मोमिन उस परमधाम से उतरे हैं, जहां अक्षर के पार परमधाम में रसूल साहब श्री राजजी महाराज के पास पहुंचे थे। अब मोमिन भी इसी रास्ते से परमधाम (मूल-मिलावा) में पहुंचेंगे।

Nijanand App

जब हक बिना कछू ना देखे, तब बूझ हुई कलमें।
जब यों कलमा जानिया, तब बका होत तिनसें।।५२ ।।

जब मोमिन श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त किसी और में चाहना नहीं रखते, तब समझो कि उन्हें ज्ञान की पहचान हो गई। जब उन्हें इस तरह से हकीकत के ज्ञान की पहचान हो जाती है, तब उन्हें अखण्ड घर मिल जाता है।

ए मोमिनों की सरीयत, छोड़ें ना हकको दम।
अर्स वतन अपना जानके, छोड़ें ना हक कदम।।५३ ।।

मोमिनों की यही शरीयत है कि वह श्री राजजी महाराज को एक क्षण के लिए भी न छोड़ें। फिर वह परमधाम को अपना अखण्ड घर समझकर श्री राजजी महाराज के चरणों को नहीं छोड़ते।

महंमद ईसा इमाम, बैत बका निसान।
सोई तीन सूरत महंमद की, देखावें अर्स रेहेमान।।५४ ।।

रसूल साहब, श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) तथा इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी ने अखण्ड घर के निशान बताए हैं। यही मुहम्मद की तीन सूरतें बसरी, मलकी और हकी हैं, जो श्री राजजी महाराज और परमधाम का दर्शन कराते हैं।

दुनी किबला करें पहाड़ को, और हक तरफों में नाहें।
अर्स बका तरफ न राखत, ए देखे फना के माहें।।५५ ।।

दुनियां पहाड़ों को पूजती है। पारब्रह्म की तरफ का ज्ञान नहीं है। अखण्ड घर परमधाम की तरफ का ज्ञान न होने के कारण से वह जाहिरी पहाड़ों को पूजते हैं और खुदा को दुनियां में है, ऐसा समझते हैं।

हकें देखाया किबला, बीच पाइए मोमिन के दिल।
ऊपर तले न दाएं बाएं, सूरत हमेसा असल।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को ही अर्श (पूज्य स्थान) बताया है। ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं कहीं अर्श नहीं है। श्री राजजी महाराज हमेशा मोमिनों के दिल में हैं।

मजाजी और हकीकी, दिल कहे भांत दोए।
ए बेवरा हकी सूरत बिना, कर न सके दूजा कोए।।५७ ।।

संसार में झूठे और सच्चे दो तरह के दिल कहे हैं। इसका फर्क हकी सूरत श्री प्राणनाथजी के बिना और कोई जाहिर नहीं कर सका।

इतहीं रोजा इत बन्दगी, इतहीं जकात ज्यारत।
साथ हकी सूरत के, मोमिनों सब न्यामत।।५८ ।।

मोमिनों का रोजा, जकात और तीर्थयात्रा (जियारत) श्री प्राणनाथजी के चरणों में है। मोमिनों के वास्ते यही सब न्यामतें हैं।

मोमिन हक बिना न देखें, एही मोमिनों ताम।
बन्दगी तवाफ सब इतहीं, मोमिनों इतहीं आराम।।५९ ।।

मोमिन श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखते। श्री राजजी महाराज का दीदार ही उनकी खुराक है। श्री राजजी महाराज की परिकरमा और बन्दगी ही मोमिनों का आराम है।

Nijanand App

खाना पीना सब इतहीं, इतहीं मिलाप मजकूर।
इतहीं पूरन दोस्ती, इत बरसत हक का नूर।। ६० ।।

खाना, पीना, मिलना, चर्चा करना, सब श्री जी के चरणों में ही है। श्री राजजी महाराज के नूरी अंग होने से यह कदीमी दोस्त कहलाते हैं और इन पर ही श्री राजजी की मेहर बरसती है।

सरूप ग्रहिए हक का, अपनी रूह के अन्दर।
पूरन सरूप दिल आइया, तब दोऊ उठे बराबर।। ६१ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप को मोमिन अपने दिल में धारण कर लें, तब श्री राजजी का स्वरूप दिल में आ जाता है। फिर आतम परआतम एक रूप हो जाती हैं।

ए सरीयत अपनी मोमिनों, और है हकीकत।
क्यों न विचार के लेवहीं, हक हादी बैठे तखत।। ६२ ।।

हे मोमिनो! यही अपनी शरीयत है। अब हकीकत की बात देखो। तुम अपने दिल से विचार करके श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी के सिंहासन पर विराजमान युगल किशोर को अपने दिल में धारण करो।

जो कदी दिल में हक लिया, कछू किया ना प्रेम मजकूर।
क्यों कहिए ताले मोमिन, जाको लिख्या बिलन्दी नूर।। ६३ ।।

यदि श्री राजजी महाराज को दिल में तो बिठा लिया और उनसे फिर प्रेम की बातें न कीं, तो उनको परमधाम के रहने वाले कैसे कहा जाए?

ए हकीकत मोमिनों, और ले न सके कोए।
बेसक होए बातें करें, तो मजकूर हजूर होए।। ६४ ।।

मोमिनों की इस हकीकत को दूसरा और कोई नहीं ले सकता, जो निःसंदेह होकर श्री राजजी महाराज से आमने-सामने बातें करे।

जो तूं ले हकीकत हक की, तो मौत का पी सरबत।
मुए पीछे हो मुकाबिल, तो कर मजूकर खिलवत।। ६५ ।।

यदि श्री राजजी महाराज की हकीकत का ज्ञान तेरे दिल में आता है, तो पहले संसार से अपना बिलकुल सम्बन्ध तोड़कर दुनियां की तरफ से मरना होगा। फिर श्री राजजी के सामने खड़े होकर धनी के सुख ले सकती है।

जो लों जाहेरी अंग ना मरें, तो लों जागें ना रूह के अंग।
ए मजकूर रूह अंग होवहीं, अपने मासूक संग।। ६६ ।।

जब तक आतम को संसार के तन की चाहना समाप्त नहीं होती, तब तक परआतम के अंग परमधाम में जगते नहीं। परमधाम में जगने के बाद ही परआतम श्री राजजी महाराज जी से बातें करेंगी।

कौल फैल आए हाल आइया, तब मौत आई तोहे।
तब रूह की नासिका को, आवेगी खुसबोए।। ६७ ।।

जब कहनी, करनी और रहनी धनी की आ जाए तो समझ लो संसार की तरफ से हम मर गए हैं। तब तुम्हारी रूह को परमधाम की सुगन्धि मिलनी शुरू हो जाएगी।

Nijanand App

रूह नैनों दीदार कर, रूह जुबां हक सों बोल।
रूह कानों हक बातें सुन, एही पट रूह का खोल।।६८ ।।

रूह की नजर खोलकर श्री राजजी महाराज का दर्शन करो। रूह की जबान से श्री राजजी महाराज से बातें करो। रूह के नाते से ही श्री राजजी महाराज की बातें सुनो। यह आत्मदृष्टि खोलनी है।

ए सहूर करो तुम मोमिनों, जब फैल से आया हाल।
तब रूह फरामोसी ना रहे, बोए हाल में नूरजमाल।।६९ ।।

हे मोमिनो! जागृत बुद्धि से विचार करके देखो। जब तुम्हारी करनी रहनी में बदल गई, तब तुम्हारी परआतम पर फरामोशी नहीं रहेगी और तब श्री राजजी महाराज के सुख की सुगन्धि मिलेगी।

बेसक होए दीदार कर, ले जवाब होए बेसक।
एही मोमिनों मारफत, खिलवत कर साथ हक।।७० ।।

फिर निश्चित ही श्री राजजी महाराज का दर्शन होगा। श्री राजजी का जवाब लेकर संशय रहित हो जाएंगे। मोमिनों का यही मारफत का ज्ञान है कि सब तरह श्री राजजी महाराज के साथ मिलकर बातें करें।

रूह हकसों बात विचार कर, दिल परदा दे उड़ाए।
रूह बातें वतन की, कर मासूक सों मिलाए।।७१ ।।

मोमिनों की रूह श्री राजजी महाराज की बातों का विचारकर दिल से फरामोशी का पर्दा उड़ा देती हैं और फिर श्री राजजी से मिलकर अपने घर की बातें करती हैं।

जो गुझ अपनी रूह का, सो खोल मासूक आगूं।
यों कर जनम सुफल, ऐसी कर हक सों तूं।।७२ ।।

अपनी रूह की छिपी बातें श्री राजजी महाराज के आगे बताती हैं। इसलिए, हे मोमिनो! तुम ऐसी रहनी बदलकर अपने जन्म को सफल बनाओ।

सब अंग सुफल यों हुए, करी हकसों सलाह सबन।
देख बोल सुन खुसबोए सों, जिनका जैसा गुन।।७३ ।।

मोमिनों के सभी अंग इस तरह से रहनी में आने से सफल हो जाते हैं। फिर श्री राजजी महाराज से बातें करते हैं। यह श्री राजजी महाराज को देखकर, उनसे बोलकर, उनकी बातों को सुनकर, जिनकी जितनी शक्ति है, वह उतना ग्रहण करती हैं।

जेते अंग आसिक के, सो सारे किए सुफल।
सोई असल रूह आसिक, जिन मोमिन अर्स दिल।।७४ ।।

आशिक रूहें इस तरह से सभी अंग पाक-साफ करती हैं। हकीकत में वह रूहें आशिक हैं, जिनके दिल को श्री राजजी महाराज अपना अर्श बनाकर बैठे हैं।

ए निसबत बिना होए नहीं, मासूक सों मजकूर।
ए मजकूर इन बिध होवहीं, यों कहे हक सहूर।।७५ ।।

श्री राजजी महाराज से अंगनाओं के बिना बातें नहीं हो सकतीं। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान को ही उनसे बातें करने का तरीका बतलाया है।

Nijanand App

मोमिनों हकीकत मारफत, इनमें भी बिध दोए।
एक गरक होत इस्क में, और आरिफ लदुन्नी सोए।।७६ ।।

मोमिनों की हकीकत और मारफत में भी दो भेद हैं। एक तो जो इश्क में गर्क हो जाते हैं, दूसरे ब्रह्मज्ञानी बनते हैं।

एक इस्क दूजा इलम, ए दोऊ मोमिनों हक न्यामत।
इस्क गरक वाहेदत में, इलमें हक अर्स लज्जत।।७७ ।।

एक इश्क देता है, दूसरा इलम। यह दोनों मोमिनों की न्यामतें हैं। इश्क वाहेदत में गर्क करता है। इलम से श्री राजजी की साहेबी का पता चलता है।

मारफत लदुन्नी मोमिनों, बंदा हक का कामिल।
बड़ी बुजरकी इन की, करें बातें हक सामिल।।७८ ।।

मोमिनों को ही तारतम ज्ञान की पहचान है। वे ही श्री राजजी महाराज के सच्चे, योग्य बन्दे कहलाते हैं। इनकी साहेबी बड़ी भारी है। श्री राजजी महाराज से बातें भी यही करते हैं।

सक नाहीं लदुन्नीय में, कहे अर्स की जाहेर बातन।
करें हकसों बातें इन विध, ज्यों करें अर्स के तन।।७९ ।।

तारतम ज्ञान आने से किसी प्रकार के संशय नहीं रह जाते। यह परमधाम की बाहरी और बातूनी सभी बातें बतलाती हैं (तारतम वाणी)। श्री राजजी से इस तरह से बातें करते हैं, जैसे परमधाम के तन (परआतम)।

हक दिया चाहें लज्जत, ताए इलम देवें बेसक।
रुह बातें करें हकसों, देखे हौज जोए हक।।८० ।।

श्री राजजी मोमिनों को लज्जत देना चाहते हैं। रूहों को पहले इलम देकर संशय मिटाते हैं। फिर रूहें श्री राजजी महाराज से हौज कौसर और जमुनाजी को देखकर बातें करती हैं।

मारफत लदुन्नी जिन लई, सो करे हक सहूर।
सहूर किए हाल आवहीं, सो हाल बीच हक मजकूर।।८१ ।।

मारफत का ज्ञान जिन्होंने लिया है, वही श्री राजजी महाराज का विचार कर सकते हैं (बातें कर सकते हैं)। शहूर करने से उनकी रहनी बदल जाती है और रहनी में आने से श्री राजजी महाराज से बातें होती हैं।

यों हक कहावत मोमिनों, नजीक हाल है तुम।
हक बातें किया चाहें, रूह सों वाहेदत खसम।।८२ ।।

इसलिए मोमिनों के वास्ते श्री राजजी महाराज कहलवा रहे हैं कि मोमिनों की रहनी उन्हें धनी के नजदीक ले आई है, इसलिए श्री राजजी महाराज अपनी अंगनाओं से बातें करना चाहते हैं।

पीछे हक सब करसी, रूह सुख लिया चाहे अब।
सुख लेने को अवसर, पीछे लेसी मोमिन सब।।८३ ।।

पीछे तो श्री राजजी महाराज सब करेंगे, पर मोमिन अभी सुख लेना चाहते हैं। सुख लेने का समय अभी आया है। पीछे तो सब सुख मोमिनों को मिलने वाला है।

Nijanand App

रूह विरहा खिन एक ना सहें, सो अब चली जात मुद्दत।
अर्स रूहें यों भूल के, क्यों छोड़ें हक मारफत।। ८४ ।।

जो रूहें एक क्षण का बिछोह सहन नहीं कर सकती थीं, उनके लिए यहां मुद्दतें बीत रही हैं, इसलिए परमधाम की रूहें इस तरह से भूलकर भी श्री राजजी महाराज का मारफत का ज्ञान नहीं छोड़ेंगी।

मारफत हुई हाथ हक के, क्यों ले सकिए सोए।
ए दोस्ती तब होवहीं, जब होए प्यार बराबर दोए।। ८५ ।।

क्योंकि मारफत भी श्री राजजी के हाथ में है। उसको कैसे ले सकते हैं? यह दोस्ती तभी सम्भव है जब दोनों तरफ से प्यार हो।

मारफत देवे इस्क, इस्कें होए दीदार।
इस्कें मिलिए हकसों, इस्कें खुले पट द्वार।। ८६ ।।

श्री राजजी महाराज के मारफत के ज्ञान से इश्क मिलता है। इश्क से दीदार होता है। इश्क से श्री राजजी महाराज का मिलना होता है। इश्क से ही परमधाम के दरवाजे खुलते हैं।

सोई रब्द जो हकसों किया, वास्ते इस्क के।
सो इस्क तब आइया, जब हकें दिया ए।। ८७ ।।

इस इश्क के वास्ते ही परमधाम में श्री राजजी महाराज से इश्क का वार्तालाप किया था। अब वह इश्क तब आया जब श्री राजजी महाराज ने दिया।

हांसी करी रूहन पर, दे इलम बेसक।
मासूक हंस के तब मिले, जब हकें दिया इस्क।। ८८ ।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को बेशक इलम देकर हंसी की। जब अपना इश्क दिया, तब हंसते हुए रूहों से मिले।

महामत कहे ए मोमिनों, सब बातों का ए मूल।
ए काम किया सब हुकमें, आए इमाम मसी रसूल।। ८९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सब बातों का यही मूल है (सार है) कि यह सब काम श्री राजजी महाराज के हुकम ने किया है। हुकम से ही यहां पर रसूल साहब, श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) और इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) आए हैं।

॥ प्रकरण ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ १९३९ ॥

कलस का कलस

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत।
कारज सारे सिध किए, अव्वल बीच आखिरत।। १ ।।

बसरी, मल्की और हकी–मुहम्मद की तीन सूरतें कुरान में लिखी हैं। जिन्होंने शुरू के, बीच के और आखिरत के सभी काम पूरे किए।

Nijanand App